Chhatrapati Shahu Ji Maharaj
University, Kanpur

Answer Script Details
Barcode 5779131

Roll No. 24029000803
Total Mark 48/75.00
Exam MASTER OF ARTS HINDI_ODD EXAM-DEC-24
Subject A010702T - SAHITYALOCHAN

Question wise Mark Summary

Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark
1A	3/5						
1B	3/5						
1C	3/5						
1D	3/5						
1E	3/5						
1F	3/5						
1G	3/5						
1H	3/5						
1I	3/5						
2	NA/15						
3	NA/15						
4	11/15						
5	NA/15						
6	10/15						
7	NA/15						
8	NA/15						
9	NA/15						

Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University
Kanpur, Uttar Pradesh

Date of Exam 24-12-2024 Shift : I Room No. : 09
Paper Code A0107027 Subject SAHITYALOCHAN Year/Sem. I-sem
Name of Candidate Ragini
Roll No. 2 4 0 2 9 0 0 0 8 0 3

Signature of Candidate: Ragini
Signature of Invigilator
COE Facsimile

PART-II

MARKS OBTAINED

Q	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
(a)										
(b)										
(c)										
(d)										
(e)										
(f)										
(g)										
(h)										
(i)										
(j)										
Total										

Total Marks in Figures | Max. Marks
Total Marks in Words

A 0 1 0 7 0 2 T
Paper Code

Signature of Evaluator

Course Master of Art (Hindi)
Session 2024-25 Year/Semester I-sem
Subject Name Sahityalochan
Medium English ○ Hindi ●

Paper Code
A 0 1 0 7 0 2 T

Exam Date
2 4 1 2 2 0 2 4

Name of Candidate
RAGINI

Father's Name
VINDHYACHAL SHARMA

महाविद्यालय का कोड
College Code
K N 0 0 9

परीक्षा केंद्र का कोड
Exam Centre Code
K N 0 0 9

परीक्षा का प्रकार
Type of Exam
संस्थागत Regular ● भूतपूर्व छात्र Ex-Student ○
व्यक्तिगत Private ○ बैक पेपर परीक्षा Back Paper Exam ○

ANSWER BOOKLET NO.
5779131

A 0 1 0 7 0 2 T
Paper Code

नामांकन संख्या
Enrollement Number C S J M A 2 4 0 0 0 1 5 9 1 9 0

परीक्षार्थी अनुक्रमांक संख्या Candidate's Roll Number
2 4 0 2 9 0 0 0 8 0 3

पेपर कोड Paper Code
A 0 1 0 7 0 2 T

Signature of Candidate: Ragini
Signature of Invigilator
C S Facsimile
COE Facsimile

नोट- 1. परीक्षार्थी को निर्देशित किया जाता है कि आवरण पन्ने के पृष्ठ भाग पर अंकित सभी निर्देशों को सावधानी पूर्वक पढ़ें।
2. ओएमआर में भरी जाने वाली प्रविष्टियाँ काली स्याही से युक्त की जाएँ। 3. गोलों को काले या नीले बॉलपेन से भरा जाएँ।

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-I

1. Read the instructions carefully given on the answer script and admit card.
2. Write Date of Exam, Shift, Paper Code & Name of Subject Correctly.
3. Write Name & Roll No. Correctly.
4. Write Semester & Branch Correctly.

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-III

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numerals in boxes.
2. Carefully study the example before you start marking.
3. As shown in the example below, blacken the circles completely.

Correct Method	Incorrect Method
① ● ③ ④	✓ ✗ ◉ ⊙

4. Make no Stray marks on this sheet.

5. DO NOT WRITE OR MARK ON THE BAR CODE.

IN ORDER TO AVOD UFM (UNFAIR MEANS) :

1. The Roll No. and Answer Book no. found elsewhere or any other symbol found in the answer book will be treated as unfair means.
2. Any tempering of Bar Code and Booklet no shall be treated as Unfair Means.
3. Do Not bring the materials like slip of paper/mobile/digital diaries/ study material/ revision notes in examination hall. Possession of the mobiles/ digital diaries/electronic/digital/ watch and any other electronic gadget except memory less scientific calculator shall be considered as UFM case.
4. Do not keep or paste currency note in answer script it shall be consider as UFM.

अनुचित साधन से बचने हेतु :

1. उत्तर पुस्तिका के निर्धारित स्थान को छोड़कर अनुक्रमांक एवं उत्तरपुस्तिका का क्रमांक कहीं और न लिखें तथा कोई भी चिन्ह न बनायें क्योंकि यह अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।
2. उत्तर पुस्तिका के बारकोड अथवा उत्तर पुस्तिका संख्या पर छेड़ छाड़ करने पर अनुचित साधन प्रयोग माना जायेगा।
3. परीक्षा कक्ष में निम्न वस्तुएं साथ न लायें, जैसे लिखे हुए कागज के टुकड़े, मोबाईल, डिजिटल डायरी, डिजिटल वॉच, कॉपी, पुस्तक यह सभी वस्तुएं जो अनुचित साधन के अन्तर्गत आती है। केवल संबंधित प्रश्नपत्र में ही मेमोरी लेस साइंटिफिक कैल्कुलेटर ले जाने की अनुमति होगी।
4. उत्तर पुस्तिकाओं में रुपये न रखें न ही उत्तर पुस्तिका में चिपकायें। ऐसा करना अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश

1. प्रश्न पत्र एवं उत्तर पुस्तिका पर दिये गये निर्देशों को ध्यान से पढ़ें।
2. कवर पृष्ठ के दूसरी तरफ कुछ न लिखें।
3. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों पर दोनों तरफ लिखें।
4. प्रश्न पत्र पर अपने अनुक्रमांक के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
5. प्रश्न पत्र कोड एवं प्रश्न पत्र ID सावधानी पूर्वक लिखें।
6. अपनी स्थिति स्पष्ट लिखें।
7. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों की संख्या देखें। अगर उत्तर पुस्तिका में पृष्ठ (1-24) से कम है या फटे हुए है, तो प शुरू होने के पूर्व दूसरी उत्तर पुस्तिका ले लें।
8. प्रश्नपत्र को देख, यदि प्रश्नपत्र के विषय कोड, विषय का नाम तथा प्रश्न में कोई त्रुटि है तो उसको परीक्षा होने के 30 मिनट के अन्दर कक्ष निरीक्षक को तत्काल सूचित करें, उसके बाद विश्वविद्यालय द्वारा कोई स नहीं की जायेगी।
9. प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिये पेंसिल का प्रयोग न करें।
10. कोई कॉपी या अतिरिक्त पत्र नहीं दिया जायेगा।

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE

1. Read the instructions carefully given on the Question Paper, Admit Card & Answer Script.
2. Do not write anything on back side of the cover page.
3. Write on both sides of pages of answer book.
4. Do not write anything on question paper except Roll Number.
5. Write Paper Code & Question Paper Id carefully.
6. CHECK the number of pages (1-24) or any other kind of damage in your answer script. if found than change the answer script immediately before the commencement of examination.
7. CHECK the Question Paper for any kind of discrepancy e.g. Subject Code, S Name, and Question of the Question Paper during first THIRTY MINUTES o commencement of the exam. so that it can be corrected in TIME. After that n corrections shall be entertained by the university.
8. Do not use pencil for answering the question.
9. Write status correctly e.g. those appearing in carry over papers should fill in st as Carry Over. Those appearing as Ex- Students should fill in status as ex.
10. No supplementary answer book & graph paper will be provided.

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-IV

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numerals in Boxes.
2. Use blue or black ball point pen for filling the circles.

	1	8	1	5	4	3	2	1	6	9
0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
1	●	1	●	1	1	1	1	●	1	1
2	2	2	2	2	2	2	●	2	2	2
3	3	3	3	3	3	●	3	3	3	3
4	4	4	4	4	●	4	4	4	4	4
5	5	5	5	●	5	5	5	5	5	5
6	6	6	6	6	6	6	6	6	●	6
7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7
8	8	●	8	8	8	8	8	8	8	8
9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	●

Note- If your Roll No. is of 10 digits. Please leave first three columns .

Paper Code A 0 1 0 7 0 2 7

खण्ड -

उत्तर सं. - 1 (A)

आलोचना का अर्थ है देखना। इसका तात्पर्य है कि किसी वस्तु या रचना को भली प्रकार से देखना आलोचना को ठीक प्रकार से देखना ही आलोचना है। आलोचना वस्तुतः संस्कृत के 'लुच' धातु से बना है जिसका अर्थ है देखना।
आलोचक द्वारा किसी कृति को भली प्रकार से देखना ही आलोचना है।
किसी कृति तथा कृतिकार के सम्बंध में भली प्रकार से देखकर अपना निष्पक्ष मत देना ही आलोचना कहलाता है।
किसी कृति को भली प्रकार से देखकर आलोचक उस कृति के विषय में अपना मत देता है। हिन्दी साहित्य में इसे ही आलोचना कहा जाता है।

संस्कृत काव्यशास्त्रों में आलोचना या टीका लिखने की पद्धति थी किन्तु नवीन युग में भी आलोचना लिखने की विभिन्न कृतिकारों द्वारा विभिन्न पद्धतियां बनाई गई हैं जो उनके आलोचनात्मक ग्रंथ में साफ झलकते हैं।
आलोचना को लिखने के हर विद्वान के अलग अलग तरीके होते हैं जो उस आलोचना की लिखने की पद्धति निर्धारित करता है।
आलोचना को लिखने के साहित्य में अनेक पद्धतियां विद्यमान हैं जिन्हें हम आलोचना पद्धति

Paper Code
A 0 1 0 7 0 2 7

के नाम से जानते हैं। हिन्दी साहित्य में आलोचना लिखने की निम्न पद्धतियाँ व्याप्त हैं जिन्हें आलोचना पद्धति कहा गया है।

भारतीय काव्यशास्त्र में आलोचना लिखने की निम्न पद्धतियाँ हैं।

i) आचार्य पद्धति
ii) शास्त्रीय पद्धति
iii) टीका पद्धति
iv) निरूपण पद्धति
v) सैद्धांतिक पद्धति
vi) ऐतिहासिक पद्धति

उत्तर सं० - 1(B)

स्वतंत्रता प्राप्ति अथवा भारतेंदु युग से पूर्व भी आलोचना लिखी जाती थी, जिसे पूर्व के आलोचक समीक्षा के नाम से उद्बोधित करते हैं।

आलोचना का अर्थ है, किसी वस्तु या कृति को भली प्रकार से देखना तथा इसके सम्बन्ध में अपना मत देना

समीक्षा का अर्थ भी आलोचना के समान ही होता है।
वास्तव में आलोचना, समीक्षा, समालोचना एक दूसरे के पर्याय शब्द हैं जिनका अर्थ

A 0 1 0 7 0 2 9

एवं पद्धति सम्बन्धु होती है।
आलोचना संस्कृत के 'लुच' धातु से मिलकर बना है जिसका अर्थ है देखना।
आलोचना का अर्थ है किसी कृति को भली प्रकार से देखना एवं उसके सम्बंध में अपना मत प्रस्तुत करना आलोचना मुख्यतः भारतेन्दु युग में विकसित हुई किंतु इस युग से पूर्व ही लेखकों ने कृतियों को भली प्रकार से देखना आरम्भ कर दिया था। तथा उनके सम्बंध में अपना मत देना भी शुरू कर दिया था

आलोचक इसे समीक्षा की संज्ञा भी देते हैं समीक्षा का अर्थ भी यही है कि किसी कृति को उच्च मापदंडों पर रखकर उसके गुण दोषों को पाठकों के समक्ष उपस्थित करना तथा उसपर अपने विचार व्यक्त करना।

आलोचना का शाब्दिक अर्थ है — भली प्रकार से देखना किंतु कुछ लोग इसका अर्थ कमी ल निकालने से लगा लेते हैं जो सरासर गलत है।
तथा इस प्रकार के समस से कृति का अनादर हो जाता है।
आलोचना का अर्थ सिर्फ कमी निकालने की कार्य ही नहीं है बल्कि इसका कार्य है कि साहित्यिक कृति के गुणों को भी उजागर करना है तथा इसकी महत्ता को सबके सामने प्रस्तुत करना है।

उत्तर सं० – 1(c)

जिस प्रकार गद्य की सभी विधाओं का विकास प्रमुखतः भारतेंदु युग में ही हुआ था उसी आलोचना का विकास एवं आविर्भाव भारतेंदु युग में ही हुआ था।

भारतेंदु युगीन कवियों साहित्य को समाज का दर्पण माना तथा साहित्य को समाज की सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक बुराइयों को स्पष्ट करने वाला भी माना है।

पूर्व काल में चली आ रही काव्य परंपरा में सिर्फ उत्कृष्टा ही व्याप्त नहीं थी बल्कि उनमें रूढ़िवादिता, परम्परावादिता भी व्याप्त थी जो साहित्यकारों को आधुनिक रचनाएं लिखने में कठिनाई प्रदान कर रही थी

इस कृतियों के सम्बंध में इस युग के साहित्यकारों ने इस सामाजिक परिवेश में रखकर इन कृतियों की महत्ता प्रवृत्ति की तथा इन कृतियों की दोषों को भी उजागर किया।

भारतेंदु युग में आलोचना का प्रारम्भ इस युग में प्रचलित पत्रिका "हिंदी प्रदीप" से हो गया था। कई कवियों तथा लेखकों की समीक्षायें उसमें प्रकाशित होने लगी थी।

इस प्रकार हिन्दी प्रदीप पत्रिका से आलोचना करने वाले लेखकों को काफी बल मिला तथा आलोचना का विकास भी हुआ।

प्रमुखतः आलोचना करने वाले भारतेन्दुयुगीन लेखकों में स्वयं भारतेन्दु के प्रतापनारायण मिश्र, बालकृष्ण भट्ट बालमुकुंद गुप्त तथा निवासदास आदी व लेखक आलोचना के क्षेत्र में एक अभूतपूर्व क्रांति ला चुके थी।

अतः भारतेंदु युग में ही आलोचना का उदित हुआ तथा उसका विकास अब तक प्रयासरत है।

उत्तर सं० – 1 (D)

(शास्त्रीय आलोचना)

आलोचना को लिखने की मुख्यतः दो पद्धतियां हैं

(i) सैद्धांतिक आलोचना (ii) व्यवहारिक आलोचना

शास्त्रीय शब्द का शाब्दिक अर्थ है काव्यांगों तथा तत्वों को उसके सिद्धान्तानुसार लिखना

शास्त्रीय आलोचना में मुख्यतः आलोचना करते वक्त आलोचना के सिद्धांतो तथा भरतमुनी

Paper Code A 0 1 0 7 0 2 T

आदि द्वारा दिए गए कार्यांगो का भी प्रकार से प्रयोग।

शास्त्रीय आलोचना में मुख्यतः काव्यांगो के नियमों एवं सिद्धांतो पर पूरा ध्यान रखा जाता है तथा आलोचना करते समय आलोच्य कवि को सिद्धांतो के मापदंडों में रखकर उसके गुण दोषों का परीक्षण करते हैं।

शास्त्रीय आलोचना प्रमुखतः भारतेंदु युग के पूर्व के लेखक किया करते थे। इस लेखकों तथा आलोचकों को उस समय के सामाजिक परिवेश तथा संस्कृत निष्ठ वाली तथा काव्यशास्त्र तथा भारतीय काव्यशास्त्र के नियमो का पूर्ण ध्यान रखना पड़ता था तथा आलोचना करते समय अपने मनोभावों तथा अपनी आकृति वृत्तियों पर ध्यान देने की अनुमति नहीं थी।

शास्त्रीय आलोचना को आज के सामाजिक परिवेश में रहने वाले आलोचक सैद्धांतिक आलोचना भी कह सकते है।

क्योंकि इस दोनों प्रकार की आलोचनाओं में संस्कृत एवं भारतीय काव्यशास्त्र के नियमों भलीपूर्वक विश्लेषण व विवेचन किया जाता है तत्पश्चात अपनी आलोचना लिखी जाती है।

Paper Code A0 10 702 T

उत्तर सं० 1[E]

व्यक्तिवादी आलोचना का स्वरूप तथा उसका अर्थ इसके शाब्दिक नाम में ही व्याप्त है।

व्यक्तिवादी आलोचना में व्यक्ति को केन्द्र में रखकर आलोचना की जाती है। तथा उसके विचारों को अधिक महत्ता प्रदान की जाती है।

व्यक्तिवादी आलोचना का मूल्य व्यक्ति या कवि के विचारों को माना गया है। तथा व्यक्ति के विचारों का अध्ययन ही इस आलोचना का विषय है।

इस प्रकार की आलोचना में आलोचक काव्यशास्त्र के नियमों सामाजिक पृष्ठभूमि एवं अथवा सांस्कृतिक मानदंडों पर अधिक ध्यान नहीं देता है। इसके आलोचना करते समय कवि या लेखक को विचारों पर अत्यधिक ध्यान केंद्रित किया जाता है।
कि उस आलोचक ने उस काव्य कृति की आलोचना करते समय उसकी मनोदशा या मनोवृत्ति का प्रभाव बहुत अधिक पड़ता है।

व्यक्तिवादी आलोचना में आलोचक आलोचना करते समय लेखक के कृति को लिखते समय के विचारों को अधिक महत्ता देता है।

इस प्रकार की आलोचना का केंद्र बिंदु उस कवि

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code A01070259

का रचनाकार होता है।

तथा व्यक्तिवादी आलोचना लिखते समय आलोचक का केंद्रबिन्दु उस लेखक के विचार होते है।

जो विचार अपने मन में लाकर लेखक कृति की रचना करता है अथवा उस कृति को पढ़के से आलोचक के मन में जो विचार आते है। व्यक्तिवादी आलोचना में लेखक को केंद्र में रखकर उसके विचारों का अध्ययन किया जाता है।

उत्तर संख्या - 1 (f)

हम सभी जानते हैं कि हिन्दी की अन्य विधाओं की तरह आलोचना विधा का विकास भी भारतेंदु युग में ही हुआ था।

आलोचना का विकास भारतेंदु युगीन लेखकों ने खूब किया किंतु वे आलोचना के क्षेत्र में ही रामचंद्र शुक्ल के समक्ष । ठीक से टिक नहीं पाये

आचार्य रामचंद्र शुक्ल का नाम हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ आलोचकों में सर्वोपरि है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की आलोचना पद्धति

अतुलनीय है इन्होंने पश्चात काल में अत्यंत प्रौढ़ आलोचनाएँ लिखी हैं जो उनकी वैचारिकता, विवेकता, सजीवता, बुद्धि, सामाजिक अनुभव विश्लेषकता आदि का प्रमाण है।

इन्होंने काव्य या कृति का सूक्ष्म अध्ययन किया है तथा ये संस्कृत के काव्यशास्त्र के भी ज्ञाता है इन्होंने अपने आलोचना में शुद्ध आलोचना की है।

आचार्य शुक्ल रसवादी आलोचक है इस कथन की पुष्टि इस बात से होती है कि इन्होंने अपनी आलोचना रस के काव्यशास्त्र का सूक्ष्म अध्ययन करके उसका अत्यन्त सजीव प्रस्तुतीकरण किया है।

आचार्य शुक्ल की आलोचना में रस के सभी नियम दिखने मिल जाते है।
इन्होंने रौद्र, करुणा, हास्य तथा शोक रस की आलोचना भी लिखि है तथा आलोचना करते समय आलोच्य कृति को व्य काव्यशास्त्र के नियमों के मानदंडों पर रखकर इस कृति की आलोचना की है आचार्य शुक्ल को आलोचक प्रौढ़ तथा सामाजिक आलोचना के लिए जानते है।

शुक्ल जी की आलोचना में सामाजिकता, मूल्यता तो विद्यमान है किंतु इन्होंने समाज की सूक्ष्म रुचियों पर ध्यान नहीं दिया। इन्होंने मानवता को तो आलोचना में ध्यान में रखा किंतु उसके मूल्यों तथा मानव के भावों पर यथोचित ध्यान नहीं दिया।

Do Not Write anything in this Portion

उत्तर सं० 1 (ग)

शुक्लोत्तर हिंदी आलोचना —

हिंदी के स्वरूप का विकास तो स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व ही हो गया था। तथा इसके पूर्व ही आलोचना के क्षेत्र में अनेक दिग्गज हिन्दी आलोचना को मिल चुके थे किंतु इन आलोचकों ने सामाजिक आलोचनाए तो लिखी किंतु इनकी आलोचना में मानवता तथा सूक्ष्मता का अभाव था।

चूंकि आचार्य शुक्ल ने छायावादी कवियों एवं काव्य को अन्तर्गत काल्पनिक माना तथा उसकी अवहेलना की।

इसलिए छायावादी कवियों को कवि के साथ आलोचनात्मक व्यक्तित्व के साथ काव्य रचना के क्षेत्र में उतरना पड़ा। ताकि वे आचार्य शुक्ल के मतों से अपने काव्य ग्रंथों को छुटकारा दिला सकें तथा

स्वतंत्र रूप से आलोचना लिखने का युग छायावाद को ही माना जाता है था। क्योंकि इस युग अधिकतर लेखक स्वयं आलोचक भी थे। तथा इन्होंने अपने लेखक तथा आलोचक व्यक्तित्व के समन्वय से

Paper Code A01 0702 T

11

श्रेष्ठ रचनाएं लिखी

छायावादी तथा शुक्लोत्तर कवियों में कवि तथा आलोचक की दृष्टि का समन्वय हो लिखने के समाज के यथार्थ रूप का चित्रण अपने काव्य में करने में सक्षम रहे तथा अपने काव्य को आलोचकों की दृष्टि से भी उत्कृष्ट बनाया

शुक्लोत्तर युग में ~~प्रमुखतः~~ दो प्रकार की आलोचनाएं लिखी जा रही थी।
जिनमे प्रगतिवादी आलोचना अधिक व्याप्त है क्योंकि इस प्रकार के आलोचना के विकासरत है तथा इससे पूर्व प्रौढ़ तथा स्थिर आलोचनाएं लिखी गई थी।

उत्तर सं० - 1 (M)

नई समीक्षा

छायावाद तथा छायावादोत्तर युग में लिखी गई आलोचना युगों को को हम नई समीक्षा का नाम दे सकते हैं

अत्यन्त दीर्घकाल से चली आ रही आलोचना पद्धति का छायावादी तथा शुक्लोत्तर कवियों ने पुरजोर विरोध किया क्योंकि इससे पूर्व के कवियों ने आज के सामाजिक परिवेश में लिखी जाने वाली कृतियों की आलोचना पूर्व के

Do Not Write anything in this Portion

सामाजिक परिवेश तथा सामाजिक मानदंडों के आधार पर की

नई समीक्षा का अर्थ है आलोचना के क्षेत्र में चली आ रही रूढ़ियों को अपने समाज के अनुरूप उनमें बदलाव तथा उनमें व्याप्त रूढ़ियों को समाप्त कर उनमें सुधार करना था।

नई समीक्षा के काल के लेखकों ने मुख्यतः प्रकृतिवादी, मानवतावादी तथा मनुष्य के विचारों का सूक्ष्म अध्ययन किया तथा इसी आधार पर अपने आलोचनात्मक ग्रंथ लिखे। इस युग के कवि ने अपने काव्यों में वर्षों से चली आ रही काव्यशास्त्र के नियमों का प्रयोग तो किया किंतु उनकी रूढ़िता का खण्डन किया उन कवियों ने भी नवीन धारा को अपनाया तथा अपनी आलोचना में प्रस्तुत किया।

इस युग के आलोचकों में, डॉ- नगेन्द्र, रामविलास शर्मा, नन्द दुलारे बाजपेयी आदि प्रमुख है।

नई समीक्षा का अर्थ है आलोचना के क्षेत्र में नवीन चेतना का विकास करना तथा रूढ़ियों का पुरजोर विरोध करना।

Paper Code

A 0 1 0 7 0 2 T

उत्तर संख्या — 1 (I)

आधुनिक काल में आलोचक को अध्यापक या दुभाषिये की संज्ञा भी दी जा सकती है क्योंकि वह भी आलोचक की भांति काव्य को पढ़ता है समझता है अपने विचार प्रकट करता है तथा पाठकों के समक्ष उसे गुन तथा अर्थ को समझाता है।

किंतु यदि अध्यापक ही उसका अर्थ न समझ सके एवं कृति की अपेक्षा अपने विचार पाठकों को समझाए तो यह आलोचक व या अध्यापक का दोष होगा।

आलोचक के प्रमुख दोष निम्नवत हैं।

आलोचक को सर्वथा कृति को ध्यान से पढ़ना चाहिए तथा उसके सम्बंध में अपने मत प्रस्तुत करने चाहिए किंतु आलोचक उस कृति का परीक्षण कर बौद्धिक व्याख्या न करके उसमें अपने मनोविकारों का प्रभाव डाल देता है।

आलोचक का प्रमुखतम दोष है कि आलोचक को कृति में जो है उसकी व्याख्या करनी चाहिए किंतु कृति के बाहर की चीजों से प्रभावित हुए बिना आलोचना करनी चाहिए

आलोचक का दोष यह भी हो सकता है कि आलोचक कृति के सम्बंध में निष्पक्ष भाव से

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code A01 07 02T

इसकी आलोचना को

तथा आलोचक की आलोचना को भली प्रकार देखना चाहिए तथा उसपर अपने मनोविकारों का प्रभाव नहीं पड़ने देना चाहिए।

आलोचना ग्रंथ को सर्वदा तत्कालीन सामाजिक परिस्थिति में रखकर उसकी आलोचना करनी चाहिए।

आलोच्य कृति की आलोचक के द्वारा उसके पूर्वाग्रहों को समाहित नहीं करना चाहिए

तथा आलोचना को नवीन मापदंडों के अनुसार व्याख्या करनी चाहिए

नकारात्मक व्याख्या आलोचना के स्वरूप तथा मूल भाव को नष्ट कर देता है।

Paper Code A01 0702T

खण्ड - ब

उत्तर संख्या - 4

आलोचना का शाब्दिक अर्थ है भली प्रकार से देखना तथा आलोचना का अर्थ समीक्षा भी है।

आलोचना संस्कृत के लुच् धातु से मिलकर बना है जिसका अर्थ होता है देखना। आलोचना का तात्पर्य है किसी वस्तु कथा कृति को भली प्रकार से देखकर उस पर अपने मत प्रस्तुत करना।

आलोचना का अर्थ है भली प्रकार से देखकर उसके गुण दोषो तथा महत्ता या अनिवार्यता को पाठको के सामने प्रस्तुत करना।

आलोचना का अर्थ समीक्षा भी होता है तथा आलोचना को साहित्य मे समालोचना के नाम से भी जाना जाता है।

आलोचना, समालोचना तथा समीक्षा ये तीनो ही शब्द एक दूसरे के पर्यायवाची है।

प्राचीन समय मे आलोचना को समीक्षा के नाम से जाना जाता था तथा आलोचना को आज के नवीन युग मे लेखक तथा आलोचक इसे

Paper Code A 0 1 0 1 0 2 T

समालोचना के अर्थ को स्पष्ट करते हैं।

प्राचीन काल में समीक्षक समीक्षा तथा टीका लिखकर अपने कर्तव्य की इति श्री समझ लेता था। किंतु आज के युग में समीक्षक का कार्य बढ़ गया है।

आज के युग में समीक्षक लिखा देने से समीक्षक के कर्तव्य की इति श्री नहीं हो जाती बल्कि कृति पर अपने विचार व्यक्त करके उसे समाज के पढ़ने योग्य बनाने तथा उसमें उपस्थित बुराइयों को ढूंढकर उनका उन्मूलन कर उसका समाधान प्रस्तुत करना आज के समीक्षक का प्रथम कर्तव्य है।

हिंदी साहित्य में आलोचना की मुख्य पद्धति सैद्धांतिक थी। तथा उस समय संस्कृत के पद्धतियों द्वारा समीक्षाएं की जाती हैं। किंतु अब आलोचना की पद्धति निम्न है

(i) टीका पद्धति (iv) शास्त्रीय पद्धति
(ii) वर्णनात्मक पद्धति (v) आचार्य पद्धति
(iii) ऐतिहासिक पद्धति (vi) समन्वय पद्धति

इसके अलावा ? आलोचना लिखने की अन्य पद्धतियां भी विद्यमान हैं तथा आलोचकों ने अनेक नई पद्धतियों का विकास

Paper Code AD 107027

भी किया है।

आलोचक के मन के विचारो तथा आलोचना शैली के आधार पर आलोचना मुख्यतः दो प्रकार की होती है।

(i) निर्णयात्मक हिन्दी आलोचना

(ii) व्याख्यात्मक हिन्दी आलोचना

निर्णयात्मक हिन्दी आलोचना मुख्यतः भारतेन्दु युग में विकसित हुए तथा इसके स्वरूप का निर्माण का श्रेय भारतेन्दु युगीन लेखको को जाता है।

निर्णयात्मक हिन्दी आलोचना मुख्यतः तीन प्रकार की होती

(i) ऐतिहासिक आलोचना
(ii) प्रभावाभिव्यंजक आलोचना
(iii) सैद्धांतिक आलोचना

सैद्धांतिक आलोचना मुख्यतः तीन प्रकार की होती है।

(i) मनोविश्लेषणवादी आलोचना
(ii) स्वच्छन्दतावादी आलोचना

इन आलोचनाओ का विवेचन निम्नवत है।

Paper Code

A 0 1 0 T 0 2 T

सैद्धांतिक आलोचना – इस प्रकार के आलोचना मे आलोचना करते वक्त आलोचना के सिद्धांतो का पूरा ध्यान रखा जाता है इस प्रकार की आलोचना मे काव्यांगो जैसे रस छन्द अलंकार का पूरा ध्यान रखा जाता है।

व्याख्यात्म आलोचना – इस आलोचना मे आलोचना के सिद्धांतो का महत्व अधिक नही होता बल्कि लेखक कृति की व्याख्या पर ध्यान देता है।

ऐतिहासिक आलोचना – ऐतिहासिक आलोचना मे आलोचना को उस समय की सामाजिक पृष्ठभूमि मे रखकर देखा जाता है जिस काल मे वो कृति लिखी गई है जिससे उस कृति की सम्पूर्ण जानकारी शोध या पाठक को हो सके।

प्रभावाभिव्यंजक आलोचना – इस आलोचना की कृति के सिद्धांतो को गौण रखा जाता है तथा उसका सम्पूर्ण उद्देश्य श्रोता या पाठक पर केंद्रित होता है। इस आलोचना को पढ़कर पाठक के हृदय पर क्या प्रभाव पड़ा इसका इसमे अधिक ध्यान रखा जाता है।

Paper Code A 0 1 0 7 0 2 1

19

खण्ड – स

उत्तर सं० – (6)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का आलोचना के क्षेत्र मे जो योगदान है उसकी बराबरी हिंदी का कोई आलोचक नही कर सकता शुक्ल जी ने अपने युग मे आलोचना का जो विस्तार किया है वो अतुल्यनीय है।

हिंदी साहित्य के इतिहास मे शुक्ल जी जैसा आलोचक शायद ही देखने मिले उन्होंने अपनी आलोचनाओं में सामाजिक तथा सांस्कृतिक परिस्थितियों का पूर्ण ध्यान रखा तथा आलोचना को एक शिखर पर पहुंचाया।

हिन्दी साहित्य मे जो स्थान उपन्यास के क्षेत्र मे प्रेमचन्द का, तथा मनोविश्लेषण के क्षेत्र मे जैनेन्द्र जी का तथा निबंध के क्षेत्र मे द्विवेदी जी का है वही स्थान आलोचना के क्षेत्र मे आचार्य शुक्ल जी का है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल युग प्रवर्तक आलोचक रहे है अपनी आलोचना शक्ति के प्रभाव से अपने आलोचना के क्षेत्र मे अपना नाम अमरीत करा लिया है।

इन्होंने आलोचना को एक नए आयाम पर पहुंचाया है।

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code A 0 1 0 7 0 2 T

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्विवेदीयुगीन आलोचक है। तथा आलोचना के क्षेत्र मे इन्होने सर्वश्रेष्ठ आलोचना ग्रंथ लिखे है।

आचार्य शुक्ल की आलोचना पद्धति प्रौढ़ एवं संस्कृत निष्ठ तथा इतिवादी थी।

आचार्य शुक्ल ने अपने जीवन काल मे अनेक आलोचना लिखे जिनमे उनकी कुछ आलोचना अत्यन्त लोकप्रिय है। जैसे

(i) गोस्वामी तुलसीदास
(ii) जायसी ग्रन्थावली
(iii) पुनर्विचार और पुनर्मिलन
(iv) हिन्दी साहित्य का इतिहास
(v) चिन्तामणि भाग -1 व 2

आचार्य शुक्ल एक समन्वयवादी आलोचक थे इन्होने काव्यशास्त्रो से सैद्धान्तिक आलोचनाओ के साथ व्यवहारवादी आलोचना भी लिखी है।

अपनी, वैचारिकता, सूक्ष्म अध्ययन, वर्गीकरण सैद्धान्तिक समझ, विवेक, अनुकरणीयता, विशिष्ट महत्वकांक्षी व्यक्तित्व तथा अतुलनीय वाणी तथा शब्दो की सूक्ष्म समझ के कारण

आचार्य शुक्ल ने अनेक ग्रंथ लिखे हैं जिससे उन्हें श्रेष्ठ लेखक के रूप में स्वीकारा गया है बहुत से आलोचकों ने उनके आलोचना की आलोचना करने का प्रयास किया तथा उनके व्यक्तित्व की खरोंचो के उद्देश्य से उनकी आलोचना करने का प्रयास किया है किंतु उन्हें मुँह की खानी पड़ी तथा आचार्य शुक्ल का कृतित्व अतुलनीय है।

शुक्ल जी अपने जीवन काल में गोस्वामी तुलसीदास को अपना आदर्श मानते थे तथा इन्होंने अपनी आलोचना ग्रंथ गोस्वामी तुलसीदास को हर तरह से एक श्रेष्ठ कवि के रूप में प्रस्तुत किया है। तथा उनके व्यक्तित्व व कृतित्व की सराहना की है।

आचार्य शुक्ल के अनुसार गोस्वामी तुलसीदास एक सर्वश्रेष्ठ कवि थे। सायद इसलिए उनकी आलोचनात्मक शैली में रामचरितमानस की सभी आलोचनात्मक मापदंड देखने को मिलते हैं।

इनके अनुसार तुलसीदास साहित्य के सर्वश्रेष्ठ कवि है तथा उनकी रचना रामचरितमानस हिन्दी साहित्य की सर्वश्रेष्ठ कृति है

आचार्य शुक्ल ने आलोचना ग्रंथ में स्थायी है

Paper Code
A 0 1 0 7 0 2 7

Do Not Write anything in this Portion

कि गोस्वामी तुलसीदास भाषा की सरल सहज सुनाने में कितने दक्ष थे तथा इन्होंने मानव को निकटो [illegible] अपनी खुबियो को अपने साहित्य से दर्शाया है।

आचार्य रामशुक्ल ने सैद्धान्तिक आलोचना तो कि किंतु छायावादी कवियो की उनकी काल्पनिकता एवं नवीन काव्य शैली के कारण इनकी काव्यो को आलोचना की दृष्टि से देखा है।

इनके अनुसार काव्य मे काल्पनिकता का स्थान नगण्य होना चाहिए तथा शुक्ल जी ने अपने प्रौढ़ आलोचक व्यक्तित्व के कारण छायावाद के नवीन कवियो की न्याय ना कर सके अतः छायावादी कवियो ने अपनी आलोचना से बचने एवं अपने साहित्य को यथोचित स्थान दिलाने के लिए कवि के साथ साथ आलोचक व्यक्तित्व के साथ काव्य समालोचना प्रारम्भ किया तथा अपने काव्य की [illegible] आलोचना तथा काव्य मे [illegible] दिलाया।

आचार्य शुक्ल ने सामाजिक महत्ता पर तो ध्यान दिया किंतु छायावादी कवियो

की भाँति मन के सूक्ष्म मानवीय विचारों पर ध्यान न दे सके यह आचार्य शुक्ल के आलोचनात्मक व्यक्तित्व का दोष सिद्ध होता है।

डॉ नगेंद्र के अनुसार — भले ही आचार्य शुक्ल प्रौढ़ तथा काव्यशास्त्र के नियमों को ध्यान में रखकर न आलोचना करते थे फिर भी अपनी वाणी एवं आलोचना करने की शक्ति से वे अतुलनीय व अविस्मरणीय आलोचक हैं। तथा उनकी तुलना अन्य किसी आलोचक से नहीं की जा सकती।

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

X

X
X